पेट्रोलियम का उपयोग : वरदान या विनाश

डॉ. वाई.पी. गुप्ता

आज के परिप्रेक्ष्य में यह विचारणीय है कि आधुनिक सभ्यता का अग्रदूत पेट्रोलियम वरदान है अथवा विनाश। इसके उपयोग से भारी प्रदूषण हो रहा है और धरती पर जीवन जीना चुनौती पूर्ण हो गया है।

आज पेट्रोलियम और औद्योगिक कचरा समुद्रों का प्रदूषण बढ़ा रहा है। तेल का रिसाव-फैलाव नई मुसीबत है। तेल के फैलाव और तेल टैंक टूटने की घटनाओं ने समुद्री इकॉलॉजी को बुरी तरह हानि पहुंचाई है, सागर तटों पर सुविधाओं को क्षतिग्रस्त किया है और पानी की गुणवत्ता को प्रभावित किया है। शायद ही कोई ऐसा सप्ताह होता हो जब बड़े टैंकरों को धोने से अथवा बंदरगाहों पर तेल भरते समय फैलाव के कारण या किसी अन्य वजह से 2000 मीट्रिक टन से अधिक तेल सागर में फैलने की दुर्घटना न होती हो।

भारत सरकार ने भारतीय समुद्री क्षेत्र में तेल के व्यापार परिवहन में लगे जहाज़ों पर गहरी चिंता जताई है। ये जहाज़ देश के तटीय जल में तेल का कचरा पम्प कर फेंकते हैं और प्रदूषण फैलाते हैं। इस तरह पर्यावरण को क्षति पहुंचती है और जीवन तथा सम्पत्ति दोनों पर खतरा मण्डराने लगता है। राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान के अनुसार केरल के तटीय क्षेत्रों में प्रदूषण के कारण झींगा, चिंगट और मछली का उत्पादन 25 प्रतिशत घट गया है।

सर्वोच्च न्यायालय ने आदेश दिया था कि तटीय राज्यों में प्रदूषण फैलाने वाले जलकृषि फार्मों को बंद कर दिया जाए क्योंकि ये पर्यावरण संदूषण के साथ-साथ भूमि क्षरण भी करते हैं। अदालत ने यह भी आदेश दिया था कि पूरे देश में तटीय क्षेत्रों से 500 मीटर तक कोई भी निर्माण कार्य न किया जाए क्योंकि औद्योगीकरण और शहरीकरण ने इन क्षेत्रों के इकॉलॉजिकल संतुलन को खतरे में डाल दिया है।

हाल में लगभग 1900 टन तेल के फैलाव ने डेनमार्क के बाल्टिक तट को प्रदूषण की चुनौती दी है। इक्वेडोर के गेलापेगोस द्वीप समूह के पास समुद्र के पानी में लगभग 6 करोड़ 55 हज़ार लीटर डीज़ल और भारी तेल रिसाव ने वहां की दुर्लभ भूमि, समुद्री जीवों और पक्षियों को जोखिम में डाल दिया है। भूकंप के बाद गुजरात में कांडला बंदरगाह पर भंडारण टैंक से लगभग 2000 मीट्रिक टन हानिकारक रसायन एक्रोनाइट्रिल रिस जाने से आसपास के निवासियों का जीवन जोखिम भरा हो गया है। पहले लगभग तीन लाख लीटर तेल कांडला बंदरगाह पर समुद्र में फैलने से जामनगर तटीय रेखा से परे कच्छ की खाड़ी के उथले पानी में समुद्री जीवन की अनेक प्रजातियां (मेरीन नेशनल पार्क, जामनगर के नज़दीक) जोखिम में आ गई थीं।

टोकियो के पश्चिम में 317 कि.मी. दूरी पर तेल फैलाव ने जापान के तटीय शहरों को हानि पहुंचाई थी। लगभग 150 मीट्रिक टन तेल पाइप से रिसाव के कारण रूस में यूराल पर्वत के दर्जनों गांवों के पीने का पानी संदूषित हो गया है। जब एक आमोद-प्रमोद जहाज़ सनजुआन (पोर्टो रीको) के कोरल रीफ में घुस गया तो अटलांटिक तट पर रिसे 28.5 लाख लीटर तेल से रिसोर्ट तट संदूषित हुआ। बम्बई हाई से लगभग 1600 मीट्रिक टन तेल फैलाव (जो शहरी तेल पाइप लाइन खराब होने से हुआ था) ने मछलियों, पक्षी जीवन और जीवन की गुणवत्ता को हानि पहुंचाई। ठीक इसी तरह बंगाल की खाड़ी में क्षतिग्रस्त तेल टैंकर से रिसे तेल ने निकोबार द्वीप समूह और अन्य क्षेत्र में मानव और समुद्री जीवन को जोखिम पहुंचाया। एक लाइबेरियन टैंकर